International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 898-899

अथर्ववेद की मूल विषयवस्तु : एक सिंहावलोकन

सत्येन्द्र कुमार सिंह
शोध छात्र, प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, भारत।

प्रस्तावना

वैदिक मंत्रों का उच्चारण तीन प्रकार से किया जाता है– 1. जिस मंत्र में अर्थ के आधार पर पाद व्यवस्था निश्चित हैं, उसे 'ऋक्' कहते हैं, 2. गीत्यात्मक मन्त्र को 'साम' तथा 3. इसके अतिरिक्त जो मन्त्र है अर्थात् पद्यामय और गानमय मन्त्रों से अतिरिक्त जितने मन्त्र हैं उन्हें 'यजुः' कहते हैं। यजुर्मन्त्र गद्य रूप में पढ़े जाते हैं। अथर्ववेद में तीनों प्रकार के मन्त्र उपलब्ध हैं। अतः इस वेद का नाम ऋक्, यजुः और साम अर्थात् मन्त्र लक्षण के आधार पर नहीं, अपितु प्रतिपाद्य विषयवस्तु के आधार पर त्रयी शब्द का प्रयोग हुआ है। तीन वेदों के अभिप्राय से नहीं भगवान कृष्णद्वैपायन से इससे भी श्रौतयज्ञ कर्मों के आधार पर है। इसी कारण अथर्ववेद के अन्य विविध नाम भी है। इस प्रकार मन्त्र के लक्षण के आधार पर एक ही वेद को चार भागों में विभक्त किया है। इसमें अथर्ववेद को अर्वाचीन नहीं कहा जा सकता है।

चारों वेदों में ऋक्, यजुः और साम– ये मन्त्र लक्षण के आधार पर प्रसिद्ध है; किन्तु अथर्ववेद इन तीनों में भिन्न नाम से जाना जाता है। चारों वेदों का समष्टिगत नाम त्रयी भी है। मूलतः इसी के आधार पर कुछ आधुनिक विद्वान् अथर्ववेद को अर्वाचीन कहते हैं, परन्तु इसके पीछे कोई ठोस आधार या युक्ति नहीं है।

अथर्ववेद के अलग–अलग नाम

अन्य वेदों की तरह अथर्ववेद का भी एक ही नाम क्यों नहीं रहा ? अथर्ववेद को विभिन्न नाम देने में क्या प्रयोजन है ? ऐसी जिज्ञासा को शान्ति के लिए संक्षेप में कुछ विचार किया जा रहा है– अथर्ववेद अनेक नामों से अभिविहित किया जाता है, जैसे अथर्ववेद, अथर्वांगिरोवे, ब्रह्मवेद, भिषग्वेद तथा क्षत्रवेद आदि।

अथर्ववेद :

पाणिनीय धातु पाठ में 'थुर्वी' धातु हिंसा के अर्थ में पठित है। वैदिक शब्दों में परोक्ष वृत्तिसाधर्म्य के आधार पर 'धुर्वी' धातु ही 'थर्व' के रूप में परिणत हो गया है। अतः जिससे हिंसा नहीं होती है उसको अथर्व कहते हैं।

वैदिक वाङ्गम में 'हिंसा' शब्द किसी को हानि या परस्पर होने वाले सामंजस्य आदि के अर्थ में भी प्रयुक्त है। अतः केवल प्राणवियोगानुकूल व्यापार ही हिंसा नहीं है। सामान्यतः हिंसा दो प्रकार की होती है– 1. आमुष्मिकी और 2. ऐहिकी। जिस कर्म या आचरण से पारलौकिक सुख में बाधा (हानि) होती है उसको आमुष्मि की हिंसा कहते हैं। इस प्रकार की हिंसा को अथर्ववेदोक्त कर्मों से दूर किया जा सकता है। दूसरी इहलौकिक सुख में होने वाली बाधा भी अथर्ववेदोक्त शान्तिक तथा पौष्टिक कर्मों से दूर की जा सकती है। अतः जिससे किसी प्रकार की हिंसा नहीं हो पाती है, उसके कारण 'अथर्ववेद' ऐसा नाम है।

अथर्वाङ्गिरोवेद

अथर्ववेद का दूसरा नाम अथर्वाङ्गिरस भी है। अथर्ववेद,[1] महाभारत,[2] मनुस्मृति,[3] याज्ञवल्क्यस्मृति[4] तथा औशनसस्मृति[5] आदि ग्रन्थों में द्वन्द्व समास के रूप में 'अथर्वांगिरस' शब्द प्रयुक्त है। इस नाम के संदर्भ में गोपथ ब्राह्मण में एक आख्यायिका है–

प्राचीनकाल में सृष्टि के लिए तपस्या कर रहे स्वयम्भू ब्रह्मा के रेतका जल में स्खलन हुआ उससे भृगुनाम के महिर्ष उत्पन्न हुए, वे भृगु स्वोत्पादक ब्रह्मा के दर्शनार्थ व्याकुल हो रहे थे उसी समय आकाशवाणी हुई– हे अथर्वा! तिरोभूत ब्रह्मा के दर्शनार्थ इसी जल में अन्वेषण करो। 'अथर्वानमेतास्वेवाप्स्वन्विच्छ'[6]। तब से भृगु का नाम ही अथर्वा हो गया। पुनः रेतयुक्त जल से आवृत्त 'वरुण' शब्द वाच्य ब्रह्मा के सभी अंगों से रस का क्षरण हो गया। उससे अंगिरा नाम से महर्षि उत्पन्न हुए। उसके बाद अथर्वा और अंगिरा के कारणभूत ब्रह्मा ने दोनों को तपस्या करने के लिए प्रेरित किया। उन लोगों की तपस्या के प्रभाव से एक अथर्वा दो ऋचाओं के मन्त्रद्रष्टा बीस अथर्वा और अंगिरसों की उत्पत्ति हुई। उन्हीं तपस्या कर रहे ऋषियों के माध्यम से स्वयम्भू ब्रह्मा ने जिन मन्त्रों के दर्शन किये, वही मन्त्रसमूह अथर्वांगिरस वेद हो गया। साथ ही एक ऋचा के मन्त्रद्रष्टा ऋषियों की संख्या भी बीस होने के कारण यह वेद बीस काण्डों में बटा है।

कुछ विद्वानों का मत यह है कि 'अथर्वन्' शब्द शान्तिक तथा पौष्टिक कर्मों का वाचक है। इसके विपरीत 'अंगिरस' पद घोर (अभिचारात्मक) कर्मों का ावाचक है। अथर्ववेद में इन दोनों प्रकार के कर्मों का उल्लेख मिलता है। अतः इसका नाम अथर्वांगिरस पड़ा। यह मत पूर्णतः स्वीकार्य नहीं हैं, क्योंकि अथर्ववेद में सबसे अधिक अध्यात्मविषयक मन्त्रों का संकलन है। उसके बाद शान्तिक तथा पौष्टिक कर्मों से सम्बद्ध मन्त्र है, किन्तु अभिचारिक कर्म से सम्बद्ध तन्त्र तो नगण्य रूप से ही है।

ब्रह्मवेद

अथर्ववेद के 'ब्रह्मवेद' अभिधान में मुख्यतः तीन हेतु उपलब्ध होते है– 1. यज्ञकर्म मकें ब्रह्मत्व प्रतिपादन, 2. ब्रह्मविषयक दार्शनिक चिन्तन–गाथा तथा 3. ब्रह्मा नामक ऋषि से दृष्ट मन्त्रों का संकलन।

उपर्युक्त तीन हेतुओं में प्रथम कारण उल्लेख्य है। श्रौतयज्ञ का सम्पादन करने के लिए चारों वेदों की आवश्यकता पड़ती है जिनमें ऋग्वेद के कार्य होता द्वारा, यजुर्वेद के कार्य अध्वर्यु द्वारा, सामवेद के कार्य उद्गाता द्वारा और अथर्ववेद के कार्य ब्रह्मा नाम के ऋषियों द्वारा सम्पन्न किये जाते हैं। यज्ञ–कार्य में सम्भाव्य अनिष्टका दूरीकरण प्रायश्चित विधियों द्वारा यज्ञ के त्रुष्टि निवारण, यज्ञानुष्ठान के क्रम में अन्य ऋत्विजों के लिए अनुज्ञाप्रदान ब्रह्मा के प्रमुख कार्य है। इस प्रकार किसी भी श्रौतयज्ञ की सफलता के लिए

ब्रह्मा की अध्यक्षता आवश्यक होती है। अतः यज्ञ कर्म में ब्रह्मत्व प्रतिपादन के कारण अथर्ववेद का दूसरा नाम 'ब्रह्मवेद' युक्तिसंगत ही है।

ब्रह्मवेदाभिधान का दूसरा कारण ब्रह्मविषयक दार्शनिक चिन्तन है। अथर्ववेद के विभिन्न स्थलों पर विराट् ब्रह्म, स्कम्भब्रह्म, उच्छिष्ठब्रह्म, ईश्वर प्रवृति, जीवात्मा, प्राण, व्रात्य वशा, ब्रह्मोदन आदि विभिन्न स्वरूपों का विस्तृत वर्णन मिलता है। अतः अध्यात्मविषयक चिन्तनाधिक्य के कारण भी ब्रह्मवेद यह नाम हो सकता है।

भिषग्वेद

अथर्ववेद के लिए 'भिषग्वेद' का प्रयोग भी मिलता है। इसमें विभिन्न रोगों तथा उनकी औषधियों का भरपूर उल्लेख किया गया है। अतः यह नाम उपयुक्त है।

क्षत्रवेद

अथर्ववेद में स्वराज्य रक्षा के लिए राजकर्म से सम्बन्धित बहुत से सूक्त उपलब्ध है इसलिए अथर्ववेद को क्षत्रवेद नाम दिया गया है।

अथर्ववेद की शाखाएँ

अथर्ववेद की नौ शाखाएँ थी जिनके नाम इस प्रकार हैं–

1. पैप्पलाद,
2. तौद,
3. मौद,
4. शौनक,
5. जाजल,
6. जलद,
7. ब्रह्मवेद,
8. देवदर्श और
9. चारण वैद्य।

इन शाखाओं में आज कल प्रचलित शौनक शाखा की संहिता पूर्ण रूप से उपलब्ध है। पैप्पलादसंहिता अभी अपूर्ण ही उपलब्ध है। इनके अतिरिक्त अन्य शाखाओं की कोई संहिता उपलब्ध नहीं है।

शौनकसंहिता का परिचय

अथर्ववेद में 20 काण्ड, 730 सूक्त, 36 प्रपाठक और 5687 मन्त्र हैं। इसमें मन्त्रों का विभाजनक्रम एक विशिष्ट शैली का है। पहले काण्ड से सातवें काण्ड तक छोटे–छोटे सूक्त हैं। पहले काण्ड में प्रायः 4 मन्त्रों के सूक्त हैं। दूसरे काण्ड में 5 मन्त्रों के, तीसरे काण्ड में 6 मन्त्रों के, चौथे काण्ड में 7 या 8 मन्त्रों के पांचवें काण्ड में 8 या उससे अधिक मन्त्रों के सूक्त हैं। छठें काण्ड में 142 सूक्त हैं और प्रायः सभी सूक्त 32 मन्त्रों के हैं। सातवें काण्ड में 118 सूक्त है और प्रत्येक सूक्त में प्रायः एक या दो मन्त्र हैं। आठवें काण्ड से 12वें काण्ड तक विषय की विभिन्नता और बड़े–बड़े सूक्तों का संकलन है। तेरहवें काण्ड में 20 तक भी अधिक मन्त्रों वाले सूक्त है, परन्तु विषय की एक रूपता है। जैसे बारहवें काण्ड में पृथ्वीसूक्त है, जिसमें राजनीतिक तथा भौगोलिक सिद्धान्तों की भावना दृष्टिगोचर होती है। इसी प्रकार 13वें और 19वीं काण्ड में अध्यात्मविषयक है, 14वें काण्ड में विवाह, 16वें में दुःस्वप्नप्रनाशन के लिए प्रार्थना, 17वें में अभ्युदय के लिए प्रार्थना, 18वें में पितृमेध, 19वें में शेष मन्त्रों में भैषज्य राष्ट्रवृद्धि आदि तथा 20वें में सोमयाग के लिए आवश्यक मन्त्रों का संकलन है। 20वें काण्ड में अधिकांश सूक्त इन्द्रविषयक है।

संदर्भ

1. अथर्ववेद, 10/7/20
2. महाभारत, 3/305/2
3. मनुस्मृति, 11/33
4. याज्ञवल्क्यस्मृति, 1/312
5. औशनसस्मृति, 3/44
6. अथर्वानमेतास्वेवाप्स्वन्विच्छ, गो0ब्रा0 1/4